प्रारंभिक परीक्षा

फ्रांस ने दुनिया के सबसे बड़े वाइट हाइड्रोजन भंडार की खोज की

संदर्भ

फ्रांस ने मोसेल क्षेत्र के फोल्श्विलर की मिट्टी के नीचे 46 मिलियन टन प्राकृतिक हाइड्रोजन की खोज की है।

वाइट हाइड्रोजन क्या है?

- **वाइट हाइड्रोजन (जिसे प्राकृतिक हाइड्रोजन भी कहा जाता है) पृथ्वी की परत में पाया जाने वाला हाइड्रोजन का एक प्राकृतिक रूप है।**
- ग्रे, ब्लू, ब्राउन या ग्रीन हाइड्रोजन के विपरीत, इसे औद्योगिक उत्पादन या कार्बन उत्सर्जक प्रक्रियाओं की आवश्यकता नहीं होती है।
- **इसे हाइड्रोजन का सबसे पर्यावरण अनुकूल रूप माना जाता है।**
- **लाभ:**
    - **प्राकृतिक रूप से उत्पन्न:** हाइड्रोजन के अन्य रूपों के विपरीत, इसके लिए **औद्योगिक उत्पादन की आवश्यकता नहीं होती।**
    - **शून्य उत्सर्जन:** यह कार्बन उत्सर्जित नहीं करता है।

हाइड्रोजन के विभिन्न प्रकार -

प्रकार	विवरण
ग्रीन हाइड्रोजन	• सौर या पवन ऊर्जा जैसे नवीकरणीय ऊर्जा स्रोतों का उपयोग करके पानी को हाइड्रोजन और ऑक्सीजन में विभाजित करके इसका उत्पादन किया जाता है। • यह **जलवायु तटस्थ** और **स्वच्छ ऊर्जा स्रोत** है।
ग्रे हाइड्रोजन	• जीवाश्म ईंधन (प्राकृतिक गैस, कोयला, आदि) से उत्पादित, वायुमंडल में कार्बन डाइऑक्साइड छोड़ते हैं। • **विश्व की हाइड्रोजन आपूर्ति का लगभग 95% हिस्सा यहीं से प्राप्त होता है।**
ब्लू हाइड्रोजन	• इसका उत्पादन जीवाश्म ईंधनों का उपयोग करके किया जाता है, लेकिन **कार्बन उत्सर्जन को संग्रहित कर लिया जाता है, जिससे यह ग्रे हाइड्रोजन की तुलना में पर्यावरण के लिए अधिक अनुकूल हो जाता है।**
पिंक हाइड्रोजन	• परमाणु ऊर्जा चालित इलेक्ट्रोलिसिस का उपयोग करके पानी को हाइड्रोजन और ऑक्सीजन में विभाजित करके इसका उत्पादन किया जाता है। • **इसे पर्पल या क्रिमसन हाइड्रोजन के नाम से भी जाना जाता है।**
टर्कोइज हाइड्रोजन (Turquoise Hydrogen)	• **मीथेन पायरोलिसिस** के माध्यम से प्राकृतिक गैस से उत्पादित, CO2 के स्थान पर ठोस कार्बन उत्पन्न करता है, जिससे यह **ग्रे हाइड्रोजन का एक स्वच्छ विकल्प बन जाता है।**

स्रोत: Times Now - White Hydrogen

ऑडिबल एन्क्लेव: ध्वनि नियंत्रण में एक नया युग

संदर्भ

हाल के अनुसंधान ने एक अभूतपूर्व प्रौद्योगिकी प्रस्तुत की है जो ध्वनि को केवल विशिष्ट स्थानों पर ही सुनने में सक्षम बनाती है, जिससे "**ऑडिबल एन्क्लेव**" का निर्माण होता है।

ऑडिबल एन्क्लेव(Audible Enclaves) के बारे में -

- **ऑडिबल एन्क्लेव या श्रव्य परिक्षेत्र ध्वनि के स्थानीयकृत क्षेत्र होते हैं, जो केवल एक विशिष्ट क्षेत्र में ही सुने जा सकते हैं, जबकि अन्य स्थानों पर वे पूर्णतः मौन रहते हैं।**
- इसका अर्थ यह है कि ध्वनि को आस-पास के अन्य लोगों को परेशान किए बिना किसी एक व्यक्ति या स्थान तक निर्देशित किया जा सकता है।

ध्वनि क्या है?

- **ध्वनि एक कंपन है जो हवा में तरंग के रूप में चलती है।**
- **ध्वनि तरंगों की आवृत्ति पिच निर्धारित करती है:**
  - **कम आवृत्ति → गहरी ध्वनियाँ** (जैसे, बास ड्रम).
  - **उच्च आवृत्ति → तीव्र ध्वनियाँ** (जैसे, सीटी)।
- ध्वनि तरंगें विवर्तन के कारण फैलती हैं, जिससे ध्वनि को एक विशिष्ट क्षेत्र तक सीमित रखना कठिन हो जाता है।

ऑडिबल एन्क्लेव कैसे काम करते हैं?

- **वाहक के रूप में अल्ट्रासाउंड का उपयोग:**
  - **अल्ट्रासाउंड तरंगें (20 kHz से ऊपर) मनुष्यों के लिए अश्रव्य** होती हैं, लेकिन हवा के माध्यम से सामान्य ध्वनि ले जा सकती हैं।
  - इन अल्ट्रासाउंड तरंगों को केवल आवश्यकतानुसार ध्वनि पहुंचाने के लिए आकार दिया जा सकता है और नियंत्रित किया जा सकता है।

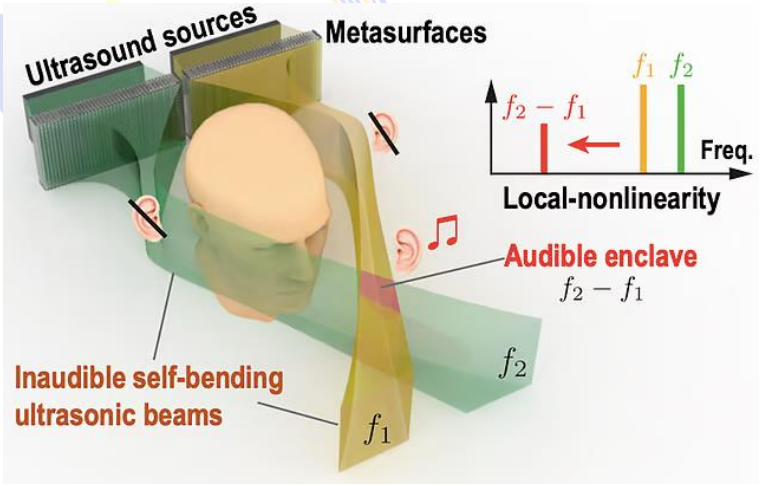

- **अरेखीय ध्वनिकी(Nonlinear Acoustics) - एक विशिष्ट स्थान पर ध्वनि उत्पन्न करना:**
  - आम तौर पर, ध्वनि तरंगें रैखिक रूप से मिश्रित होती हैं (बस एक साथ जोड़कर)।
  - हालांकि, उच्च तीव्रता पर, ध्वनि तरंगें गैर-रैखिक रूप से परस्पर क्रिया करती हैं, जिससे नई आवृत्तियाँ उत्पन्न होती हैं जो पहले नहीं थीं।
  - वैज्ञानिक अलग-अलग आवृत्तियों पर दो अल्ट्रासाउंड किरणों का उपयोग करते हैं जो अपने आप में मौन होती हैं लेकिन केवल वहीं श्रव्य ध्वनि उत्पन्न करती हैं जहाँ वे एक दूसरे को काटती हैं।
- **झुकने वाली अल्ट्रासाउंड तरंगें:**
  - सामान्यतः ध्वनि तरंगें **सीधी रेखाओं में चलती हैं**।

  - **ध्वनिक मेटासर्फेस(acoustic metasurfaces - ध्वनि तरंगों को आकार देने वाली विशिष्ट सामग्री)** का उपयोग करके, वैज्ञानिक **अल्ट्रासाउंड किरणों को** एक विशिष्ट लक्ष्य पर मोड़ सकते हैं, जिससे उस स्थान पर एक **ऑडिबल एन्क्लेव** या **श्रव्य परिक्षेत्र का निर्माण हो सकता है।**
- **अलग आवृत्ति का उत्पादन**:
  - जब थोड़ी भिन्न आवृत्तियों की दो अल्ट्रासाउंड किरणें एक दूसरे पर ओवरलैप होती हैं, तो वे अपनी आवृत्तियों के बीच के अंतर पर एक नई ध्वनि उत्पन्न करती हैं।
  - **उदाहरण:**
    - **40 kHz** पर एक किरण
    - **39.5 kHz** पर एक और किरण
    - अंतर = **0.5 kHz (500 Hz), जिसे मनुष्य सुन सकते हैं**
  - **इसका अर्थ यह है कि ध्वनि केवल उस बिंदु पर मौजूद होती है जहां तरंगें मिलती हैं, और कहीं नहीं।**

ऑडिबल एन्क्लेव के संभावित अनुप्रयोग -

- **निजी ऑडियो:** हेडफ़ोन के बिना और दूसरों को परेशान किए बिना संगीत, पॉडकास्ट या कॉल सुनें।
- **सार्वजनिक स्थानों पर वैयक्तिकृत ऑडियो:** संग्रहालय, पुस्तकालय और कार्यालय बिना स्पीकर के स्थान-आधारित ऑडियो प्रदान कर सकते हैं।
- **शोर नियंत्रण:** अवांछित शोर को रद्द करके **शांत क्षेत्र** बनाने के लिए इसका उपयोग किया जा सकता है।
- **गोपनीय बातचीत:** सैन्य, कॉर्पोरेट और सुरक्षा सेटिंग्स **खुले स्थानों में निजी चर्चा सुनिश्चित कर सकती हैं**।
- **कार ऑडियो:** यात्री, चालक का ध्यान भटकाए बिना संगीत सुन सकते हैं।

स्रोत:

- **Down to Earth**
- **The Hindu**

चंद्रमा पर जल बर्फ की उपलब्धता

संदर्भ

चंद्रयान-3 मिशन द्वारा एकत्र आंकड़ों पर आधारित एक नए अध्ययन से पता चला है कि चंद्रमा की सतह के नीचे ध्रुवों पर पानी की बर्फ पहले की तुलना में अधिक स्थानों पर मौजूद हो सकती है।

चंद्रयान-3 डेटा से मुख्य निष्कर्ष -

- **ChaSTE द्वारा इन-सीटू तापमान माप:**
  - **विक्रम लैंडर** पर लगे **ChaSTE(चन्द्रा सरफेस थर्मोफिजिकल एक्सपेरीमेंट) जांच यान ने** चन्द्रमा की सतह के नीचे विभिन्न गहराइयों (**10 सेमी** तक) पर तापमान मापा।
  - लैंडर 23 अगस्त 2023 को चंद्रमा के दक्षिणी ध्रुव के पास शिव शक्ति बिंदु पर 69° दक्षिण अक्षांश पर उतरा।
- **प्रमुख तापमान अवलोकन:**
  - लैंडिंग स्थल (सूर्य की ओर ढलान, 6° कोण) पर अधिकतम सतह का तापमान दिन के दौरान 82°**C** था और रात में -170°**C** तक गिर गया।
  - सिर्फ़ एक मीटर दूर, एक सपाट सतह पर, तापमान काफी कम था, जो 60°**C** पर पहुंच गया।
  - यह अंतर बताता है कि ढलान में मामूली बदलाव भी सतह के तापमान को प्रभावित करते हैं, जो बदले में प्रभावित करते हैं कि बर्फ कहाँ बन सकती है और स्थिर रह सकती है।

चंद्रमा पर जल बर्फ का महत्व:

- **भविष्य के मिशनों के लिए महत्वपूर्ण संसाधन** → बर्फ का उपयोग **पीने के पानी, ऑक्सीजन उत्पादन और रॉकेट ईंधन के लिए किया जा सकता है**।
  - **इलेक्ट्रोलिसिस** के माध्यम से जल के अणुओं को हाइड्रोजन और ऑक्सीजन में विभाजित करके रॉकेट ईंधन बनाने के लिए किया जा सकता है, जिसे बाद में तरलीकृत करके प्रणोदक के रूप में इस्तेमाल किया जा सकता है।
- **चंद्रमा के इतिहास को समझना** → बर्फ के जमाव का अध्ययन करने से यह पता चल सकता है कि समय के साथ **पानी कैसे जमा हुआ और आगे बढ़ा**, जिससे चंद्रमा के **भूवैज्ञानिक अतीत के बारे में सुराग मिल सकता है**।
- **अन्वेषण और निपटान** → आसानी से सुलभ बर्फ मिलने से **मनुष्यों के लिए चंद्रमा पर रहना और काम करना आसान हो जाता है**।

ढलान बर्फ निर्माण को कैसे प्रभावित करती हैं

- शोधकर्ताओं ने यह समझने के लिए एक तापमान मॉडल विकसित किया कि ढलान का कोण सतह के तापमान को कैसे प्रभावित करता है।
- **मॉडल से निष्कर्ष:**
  - **सूर्य की ओर मुख वाली ढलानें** → अधिक गर्मी अवशोषित करती हैं, जिससे उनमें **बर्फ जमने की संभावना कम होती है**।
  - **सूर्य से दूर** (चन्द्र ध्रुवों की ओर) ढलानें → **ठंडी रहती हैं, जिससे सतह के निकट** बर्फ जमा हो जाती है।
  - 14° से अधिक कोण वाला ढलान तापमान को इतना कम बनाए रख सकता है कि बर्फ स्थिर बनी रहे।
- **नासा के आर्टेमिस मिशन से तुलना:**
  - इस अध्ययन में पाई गई तापमान स्थितियां **नासा के आर्टेमिस कार्यक्रम के लिए प्रस्तावित लैंडिंग स्थलों से मेल खाती हैं**, जिसका उद्देश्य चंद्रमा के **दक्षिणी ध्रुव का अन्वेषण करना है**।

- इससे पता चलता है कि **बर्फ पहले की अपेक्षा अधिक स्थानों पर उपलब्ध हो सकती है**, जिससे भविष्य में चंद्र अन्वेषण **आसान और अधिक संसाधन-कुशल हो जाएगा**।

चंद्रमा पर तरल जल क्यों नहीं हो सकता?

- **चंद्रमा पर वायुमंडल नहीं है, इसलिए वहां तरल जल नहीं बन सकता।**
- गर्मी के संपर्क में आने पर बर्फ **सीधे वाष्प में परिवर्तित हो जाती है।**
- इससे यह पुष्टि होती है कि **चंद्रमा पर अतीत में कभी रहने योग्य परिस्थितियां नहीं थीं।**

स्रोत: **The Hindu - water ice easier to find on moon than believed**

अपतटीय खनन और केरल में विरोध प्रदर्शन

संदर्भ

केरल सरकार और मछुआरा समुदाय केंद्र की अपतटीय खनन योजना का इसके संभावित पर्यावरणीय और आर्थिक प्रभावों के कारण कड़ा विरोध कर रहे हैं।

अपतटीय खनन(Offshore Mining) क्या है?

- **अपतटीय खनन से तात्पर्य महाद्वीपीय शेल्फ, अनन्य आर्थिक क्षेत्र (EEZ) और अन्य समुद्री क्षेत्रों जैसे पानी के नीचे के क्षेत्रों से खनिजों और संसाधनों के निष्कर्षण से है।** इन संसाधनों में शामिल हैं:
  - **बहुधात्विक पिंड** (मैंगनीज, निकल, कोबाल्ट और तांबे से समृद्ध)।
  - **चूना-मिट्टी एवं निर्माण-ग्रेड रेत।**
- **अपतटीय क्षेत्र खनिज (विकास और विनियमन) अधिनियम, 2002 (OAMDR अधिनियम):**
  - **भारत के समुद्री क्षेत्रों में खनन गतिविधियों को** विनियमित करता है।
  - इससे पहले, अपतटीय उत्खनन को **सरकारी निकायों द्वारा नियंत्रित किया जाता था** जैसे: **भारतीय भूवैज्ञानिक सर्वेक्षण (जीएसआई), भारतीय खनन ब्यूरो और परमाणु खनिज निदेशालय**
  - **2023 में संशोधन:**
    - **प्रतिस्पर्धी नीलामी** के माध्यम से **निजी क्षेत्र की भागीदारी की** अनुमति दी गई।
    - **बहुधात्विक पिंड, चूना-कीचड़ और रेत** जैसे खनिजों के लिए अपतटीय खनन खोला गया।

कानूनी ढांचा और अधिकार क्षेत्र के मुद्दे -

- **OMDR अधिनियम में "अपतटीय क्षेत्रों"** को प्रादेशिक जल, महाद्वीपीय शेल्फ, EEZ और अन्य समुद्री क्षेत्रों के रूप में परिभाषित किया गया है।
- **अपतटीय क्षेत्रों में खनन अधिकार केन्द्र सरकार के हैं।**
- **12 समुद्री मील तक मछली पकड़ने का अधिकार राज्य के अधिकार क्षेत्र** में है (**भारतीय संविधान की सातवीं अनुसूची** के अनुसार)।
- **केंद्रीय खनन मंत्रालय का रुख:**
  - कोल्लम तट पर प्रस्तावित 3 ब्लॉक 12 समुद्री मील से परे हैं, जिसका अर्थ है कि वे केंद्रीय अधिकार क्षेत्र में आते हैं न कि केरल के नियंत्रण में।

प्रमुख अपतटीय खनन ब्लॉक और भंडार -

- **ई-नीलामी की पहला भाग (नवंबर 2023)** → खनन के लिए 13 अपतटीय ब्लॉक:
  - 3 केरल तट पर
  - गुजरात से 3 रन
  - अंडमान एवं निकोबार द्वीप समूह में 7
- **खनन पट्टा:** 50 वर्ष
- **केरल अपतटीय रेत भंडार:**
  - **जीएसआई द्वारा अध्ययन:** केरल के तटवर्ती क्षेत्र में **745 मिलियन टन निर्माण-ग्रेड रेत है**।
  - **कोल्लम तट ब्लॉक:**
    - प्रस्तावित तीन ब्लॉकों में **300 मिलियन टन रेत का भंडार पाया गया।**
    - समुद्र में **48 मीटर से 62 मीटर** की गहराई पर स्थित है।

मछुआरा समुदाय और पर्यावरणविदों द्वारा उठाई गई चिंताएँ -

- **समुद्री पारिस्थितिकी तंत्र और मत्स्य पालन पर प्रभाव:**

  - **कोल्लम परप्पू (क्विलोन बैंक)**: भारत के दक्षिण-पश्चिमी तट पर सबसे अधिक उत्पादक मछली पकड़ने वाले क्षेत्रों में से एक। यहाँ खनन से समुद्री मछली पकड़ने में कमी आ सकती है।
- **समुद्रतल खनन के प्रभाव:**
  - **पानी का बादल बनना → प्रकाश का प्रवेश कम हो जाता है**, जिससे **यूफोटिक क्षेत्र** (प्रकाश संश्लेषण के लिए पर्याप्त प्रकाश वाला क्षेत्र) सिकुड़ जाता है।
  - **तलछट प्लम → हजारों वर्ग किलोमीटर तक यात्रा कर सकते हैं**, जिससे समुद्री जीवन प्रभावित होता है।
  - **विषाक्त पदार्थों का उत्सर्जन** → मछलियों को विषाक्त कर सकता है तथा जलीय पारिस्थितिकी तंत्र को बाधित कर सकता है।
- **मछुआरों की आजीविका पर प्रभाव:**
  - केरल के **222 मछली पकड़ने वाले गांवों** में **11 लाख मछुआरों** की **मुख्य आजीविका मछली पकड़ना है।**
  - **खनन कार्यों से** मछली स्टॉक में कमी आ सकती है और **बड़े खनन जहाजों का उपयोग किया जा सकता है**, जिससे **मछली पकड़ने की गतिविधियां बाधित हो सकती हैं और सुरक्षा जोखिम पैदा हो सकता है**।
- **आर्थिक चिंताएं: सभी खनन रॉयल्टी केंद्र सरकार** को जाएगी, जिससे **केरल को कोई प्रत्यक्ष लाभ नहीं होगा**।

स्रोत: **Indian Express- Offshore Mining**

ट्रेकोमा रोग(Trachoma Disease)

संदर्भ

विश्व स्वास्थ्य संगठन (WHO) ने आधिकारिक तौर पर भारत में ट्रैकोमा को सार्वजनिक स्वास्थ्य समस्या के रूप में समाप्त घोषित कर दिया है। भारत यह उपलब्धि हासिल करने वाला WHO दक्षिण पूर्व एशिया क्षेत्र का तीसरा देश बन गया है। (नेपाल और म्यांमार के बाद)।

ट्रेकोमा रोग के बारे में -

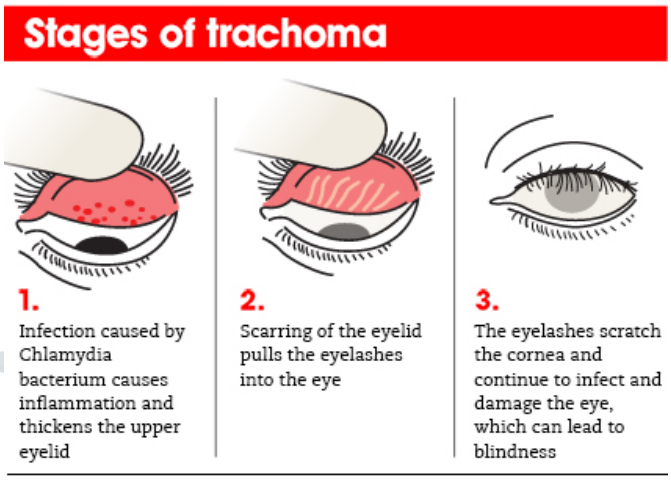

- **यह एक संक्रामक नेत्र रोग है जो क्लैमाइडिया ट्रैकोमैटिस जीवाणु के कारण होता है।**
- यह विश्व भर में अंधेपन का प्रमुख संक्रामक कारण है और मुख्य रूप से निर्धन क्षेत्रों में रहने वाले लोगों को प्रभावित करता है, जहां स्वच्छ जल और स्वच्छता तक सीमित पहुंच है।
- **विश्व स्वास्थ्य संगठन ने ट्रेकोमा को उपेक्षित उष्णकटिबंधीय रोग (NTD) करार दिया है।**
- **संचरण**
    - संक्रमित व्यक्ति की आंख या नाक के स्राव के सीधे संपर्क के माध्यम से।
    - यह दूषित वस्तुओं (जैसे तौलिये) तथा बैक्टीरिया ले जाने वाली मक्खियों के माध्यम से भी फैल सकता है।
- **जोखिमग्रस्त आबादी:**
    - प्रीस्कूल आयु के बच्चे संक्रमण के मुख्य स्रोत हैं, लेकिन भीड़-भाड़ वाले स्थानों पर रहने वाले तथा उचित स्वच्छता के अभाव में रहने वाले कोई भी व्यक्ति इससे प्रभावित हो सकता है।
    - **ट्रेकोमा से होने वाली अंधता अपरिवर्तनीय है।**

रोकथाम और उपचार -

- **वर्तमान में ट्रेकोमा का कोई टीका उपलब्ध नहीं है, लेकिन रोकथाम संभव है।**
- विश्व स्वास्थ्य संगठन (WHO) SAFE रणनीति की सिफारिश करता है, जिसमें निम्नलिखित शामिल हैं:
    - **सर्जरी(S)**: ट्राइकियासिस (अंदर की ओर मुड़ी हुई पलकें) को ठीक करने के लिए।
    - **एंटीबायोटिक्स(A)**: संक्रमण को दूर करने के लिए एज़िथ्रोमाइसिन के साथ सामूहिक उपचार।
    - **फेशियल क्लीनलीनेस(F)**: संक्रमण को कम करने के लिए स्वच्छता को बढ़ावा देना।
    - **एनवायरमेंटल इंप्रूवमेंट(E)**: स्वच्छ जल और स्वच्छता सुविधाओं तक पहुंच बढ़ाना।

विभिन्न रोगों के उन्मूलन के लिए भारत द्वारा निर्धारित लक्ष्य:

- मलेरिया - 2030
- क्षय रोग - 2025
- सिकल सेल एनीमिया – 2047

स्रोत: PIB - Trachoma

विज्ञान धारा योजना

संदर्भ

भारत सरकार ने विज्ञान धारा योजना के लिए आवंटन को ₹330.75 करोड़ (2024-25) से बढ़ाकर ₹1425.00 करोड़ (2025-26) कर दिया है।

विज्ञान धारा योजना के बारे में -

- **यह एक केन्द्रीय क्षेत्र की योजना है जो विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विभाग (डीएसटी) की तीन प्रमुख योजनाओं को एकीकृत करती है।**
- **इसके 3 प्रमुख घटक हैं:**
    - **विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी (एस एंड टी) संस्थागत एवं मानव क्षमता निर्माण**
        - शैक्षणिक संस्थानों में उन्नत अनुसंधान प्रयोगशालाओं की स्थापना।
        - संकाय विकास और छात्र अनुसंधान सहायता।
        - अंतर्राष्ट्रीय वैज्ञानिक सहयोग को बढ़ावा देना।
    - **अनुसंधान और विकास:**
        - अंतर्राष्ट्रीय मेगा सुविधाओं तक पहुंच के साथ बुनियादी अनुसंधान को प्रोत्साहन।
        - टिकाऊ ऊर्जा और जल जैसे प्रमुख क्षेत्रों में अनुवादात्मक अनुसंधान के लिए समर्थन।
        - अनुसंधान एवं विकास उत्पादन को बढ़ाने के लिए भारत के पूर्णकालिक समकक्ष (एफटीई) शोधकर्ताओं की संख्या को मजबूत करना।
    - **नवाचार, प्रौद्योगिकी विकास और परिनियोजन।**
        - विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी में स्टार्टअप्स और उद्यमियों के लिए समर्थन।
        - प्रौद्योगिकी हस्तांतरण और व्यावसायीकरण की सुविधा।
        - आयात पर निर्भरता कम करने के लिए स्वदेशी प्रौद्योगिकियों का विकास।
        - स्कूलों से लेकर उच्च शिक्षा और उद्योगों तक नवाचार को बढ़ावा देना।
- **अन्य घटक:**
    - **विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी में लैंगिक समानता को बढ़ावा देना:**
        - विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी (एस एंड टी) में महिलाओं की भागीदारी बढ़ाने के लिए विशेष कार्यक्रम।
        - लक्षित हस्तक्षेपों के माध्यम से विज्ञान, प्रौद्योगिकी और नवाचार (एसटीआई) में लैंगिक समानता सुनिश्चित करना।
- योजना के अनुसंधान एवं विकास घटक को अनुसंधान नेशनल रिसर्च फाउंडेशन(**ANRF**) के अनुरूप बनाया जाएगा।

स्रोत: [PIB - Vigyan Dhara]

मलेरिया के लिए उच्च बोझ से उच्च प्रभाव(HBHI) समूह से भारत का बाहर निकलना

संदर्भ

भारत ने मलेरिया नियंत्रण में महत्वपूर्ण प्रगति की है, जिससे वह HBHI श्रेणी से बाहर निकल सका है।

मलेरिया में कमी के लिए प्रमुख रणनीतियाँ -

- **रोग प्रबंधन:**
  - **मामले का शीघ्र पता लगाना:**
    - मलेरिया के मामलों की शीघ्र पहचान के लिए सक्रिय, निष्क्रिय और प्रहरी निगरानी।
    - प्रभावी उपचार और मजबूत रेफरल सेवाएं।
  - **महामारी की तैयारी और त्वरित प्रतिक्रिया:** प्रकोप को नियंत्रित करने के लिए त्वरित हस्तक्षेप सुनिश्चित करना।
- **एकीकृत वेक्टर प्रबंधन:**
  - **इनडोर अवशिष्ट छिड़काव (IRS)**: चयनित उच्च जोखिम वाले क्षेत्रों में उपयोग किया जाता है।
  - **लंबे समय तक चलने वाले कीटनाशक जाल (LLINs)**: उच्च मलेरिया-स्थानिक क्षेत्रों में वितरित किए जाते हैं।
  - **लार्वा नियंत्रण उपाय**:
    - मच्छरों के लार्वा को नियंत्रित करने के लिए लार्वाभक्षी मछली का उपयोग।
    - जैव-लार्वीनाशकों का उपयोग करके लार्वा-रोधी पहल।
    - शहरी क्षेत्रों में मच्छरों के प्रजनन को रोकने के लिए पर्यावरण इंजीनियरिंग।
- **सहायक हस्तक्षेप:**
  - **व्यवहार परिवर्तन संचार (BCC)**: मलेरिया की रोकथाम के बारे में समुदायों को शिक्षित करना।
  - **अंतर-क्षेत्रीय अभिसरण**: प्रभावी मलेरिया नियंत्रण के लिए विभिन्न सरकारी विभागों के बीच समन्वय।
  - **मानव संसाधन विकास**: मलेरिया प्रबंधन में सुधार के लिए स्वास्थ्य पेशेवरों का प्रशिक्षण और क्षमता निर्माण

स्रोत: PIB - Malaria

समाचार संक्षेप में

ग्रामीण क्रेडिट स्कोर (GCS)

- **GCS स्वयं सहायता समूहों (SHGs) और ग्रामीण व्यक्तियों की ऋण पात्रता का आकलन करने और उसे बेहतर बनाने के लिए एक वित्तीय ढांचा है।**
- इसे **केंद्रीय वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण ने केंद्रीय बजट 2025-26** में पेश किया था।

ग्रामीण क्रेडिट स्कोर के मुख्य लाभ -

- **उन्नत वित्तीय पहुंच:**
  - अपना व्यवसाय विस्तार करने के लिए ऋण प्राप्त करने में सहायता करता है।
  - वित्तीय साक्षरता को बढ़ावा देना, ग्रामीण नागरिकों को निम्नलिखित अवधारणाओं से परिचित कराना: ऋण पात्रता, ऋण ईएमआई और पुनर्भुगतान, क्रेडिट स्कोर और क्रेडिट कार्ड।
- **अनुकूलित वित्तीय उत्पाद:**
  - सूक्ष्म उद्यमों के लिए 5 लाख रुपये तक की सीमा वाले नए क्रेडिट कार्ड तैयार किए गए।
- **बेहतर क्रेडिट मूल्यांकन:**
  - स्वयं सहायता समूह के सदस्यों की ऋण-पात्रता का आकलन करने के लिए डिजिटल ढांचा।
  - वर्तमान क्रेडिट ब्यूरो प्रणाली में अंतराल को पाटने में मदद करता है, जो अक्सर एसएचजी सदस्यों की अनदेखी करता है।
  - ग्रामीण महिलाओं को अपने क्रेडिट स्कोर, ऋण सीमा और पुनर्भुगतान विकल्पों पर नज़र रखने की सुविधा प्रदान करता है।
- **आर्थिक स्थिरता और विकास:**
  - ऋण तक पहुंच में वृद्धि ▶️ स्वयं सहायता समूह की महिलाओं के लिए अधिक वित्तीय स्वतंत्रता।
  - ग्रामीण भारत में उद्यमशीलता को प्रोत्साहित करता है , जिससे सतत आर्थिक विकास को बढ़ावा मिलता है।

स्रोत: PIB - GCS, Mint

वरुण – 2025

- **यह भारत और फ्रांस के बीच वार्षिक द्विपक्षीय नौसैनिक अभ्यास है।**
- **वरुण की शुरुआत 2001 में हुई थी, यह इसका 23वां संस्करण है।**
- दोनों देशों की प्रमुख नौसैनिक संपत्तियां भाग लेंगी, जिनमें शामिल हैं: आईएनएस विक्रांत (भारत), चार्ल्स डी गॉल (फ्रांस), राफेल-एम और मिग-29के।
- **अन्य द्विपक्षीय अभ्यास:** गरुड़ (वायु सेना), शक्ति (थल सेना)।

स्रोत: PIB - Varuna 2025

कैराकल

- हाल ही में राजस्थान के वन मंत्री ने मुकुंदरा हिल्स टाइगर रिजर्व (**MHTR)** में कैराकल का पहला फोटोग्राफिक रिकॉर्ड साझा किया।

कैराकल के बारे में -

- **कैराकल मध्यम आकार की जंगली बिल्लियाँ हैं जो अफ्रीका, मध्य पूर्व, मध्य एशिया और दक्षिण एशिया की मूल प्रजाति हैं।**
- वे मुख्यतः रात्रिचर होती हैं और अपने विशिष्ट, नुकीले काले कानों के लिए जानी जाती हैं।
- **इसका नाम तुर्की शब्द 'काराकुलक' से लिया गया है, जिसका अर्थ है काले कान।**

- कैराकल का उल्लेख मध्यकालीन भारतीय ग्रंथों जैसे: **खम्सा-ए-निज़ामी, शाहनामा और तूतीनामा में मिलता है।**
    - **इनका उपयोग भारतीय राजघरानों द्वारा पक्षियों के शिकार के लिए किया जाता था।**
- **संरक्षण की स्थिति:**
    - **WPA -** अनुसूची I।
    - **आईयूसीएन -** न्यूनतम चिंताजनक
    - इसे भारत में राष्ट्रीय वन्यजीव बोर्ड द्वारा गंभीर रूप से संकटग्रस्त श्रेणी में सूचीबद्ध किया गया है।
- **जनसंख्या में तीव्र गिरावट:**
    - ऐतिहासिक रूप से कैराकल **13 भारतीय राज्यों में पाए जाते थे**।
    - **2000** तक → जनसंख्या **50% कम हो गयी**।
    - **2001** से 2020 तक → **95% की और गिरावट**।
    - अब यह 16,709 वर्ग किमी (अपनी ऐतिहासिक सीमा का 5% से भी कम) के क्षेत्र तक सीमित है।
    - वर्तमान में भारत में केवल **50 कैराकल बचे हैं, जो केवल दो राज्यों - राजस्थान और गुजरात में पाए जाते हैं।**

कैराकल के लिए खतरा

- शहरीकरण और बुनियादी ढांचे के विकास के कारण **आवास की हानि।**
- **शिकार की उपलब्धता में कमी** (छोटे खुर वाले जानवर, कृंतक, पक्षी)।
- **प्राकृतिक आवासों पर अतिक्रमण**, विशेष रूप से **चंबल के बीहड़ों में**, जिन्हें **पारिस्थितिकी दृष्टि से महत्वपूर्ण क्षेत्रों** के बजाय **बंजर भूमि के रूप में वर्गीकृत किया गया है**
- **अवैध वन्यजीव व्यापार**: कैराकल को **पकड़ कर विदेशी पालतू जानवर के रूप में बेचा जाता है**।

स्रोत: **Indian Express - Caracal**

संपादकीय सारांश

भारत को हिंद महासागर क्षेत्र में एकीकरणकर्ता के रूप में कार्य करना चाहिए

संदर्भ

भारत को समुद्री सुरक्षा सुनिश्चित करने, चीन के प्रभाव का मुकाबला करने, व्यापार मार्गों की सुरक्षा करने तथा रणनीतिक नेतृत्व के माध्यम से क्षेत्रीय स्थिरता को बढ़ावा देने के लिए हिंद महासागर क्षेत्र (आईओआर) में एकीकरणकर्ता के रूप में कार्य करना चाहिए।

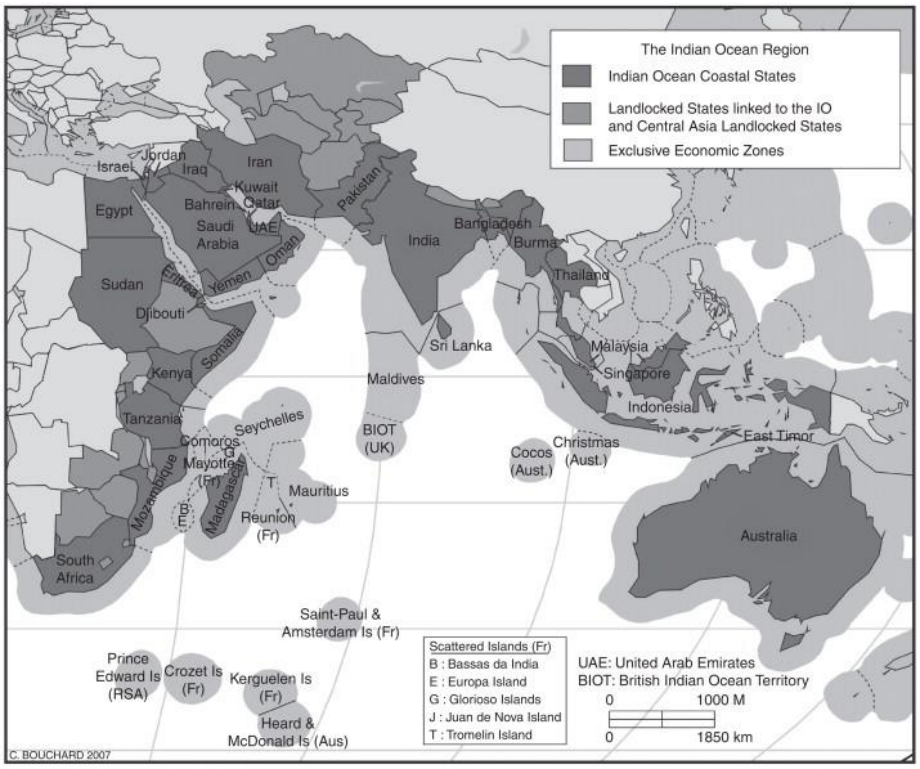

भारत को हिंद महासागर क्षेत्र में एकीकरणकर्ता के रूप में क्यों कार्य करना चाहिए?

- **व्यापारिक महत्व:** भारत का लगभग 70% तेल आयात हिंद महासागर क्षेत्र के माध्यम से विभिन्न बंदरगाहों के माध्यम से किया जाता है।
    - भारत का अधिकांश अंतर्राष्ट्रीय व्यापार, जो परिमाण की दृष्टि से लगभग 90% है, समुद्री मार्गों पर निर्भर करता है।
- **भू-रणनीतिक महत्व**: हिंद महासागर क्षेत्र में भारत की केंद्रीय स्थिति क्षेत्रीय सुरक्षा और व्यापार को प्रभावित करने के लिए रणनीतिक लाभ प्रदान करती है।
- **चीन की बढ़ती उपस्थिति का प्रतिकार:** स्ट्रिंग ऑफ पर्ल्स जैसी परियोजनाओं और हिंद महासागर क्षेत्र में सैन्य ठिकानों के माध्यम से चीन का बढ़ता प्रभाव क्षेत्रीय स्थिरता के लिए खतरा है।
    - चीन के सामरिक प्रभुत्व का मुकाबला करने के लिए भारत को क्षेत्रीय सहयोग का नेतृत्व करना चाहिए।
- **समुद्री सुरक्षा सुनिश्चित करना:** समुद्री डकैती, तस्करी और समुद्री आतंकवाद भारत के व्यापार और सुरक्षा के लिए प्रत्यक्ष खतरे पैदा करते हैं (**उदाहरण के लिए, गोल्डन क्रीसेंट और गोल्डन ट्रायंगल)** .
    - एक एकीकृत क्षेत्रीय ढांचा समुद्री निगरानी और सामूहिक प्रतिक्रिया तंत्र को मजबूत कर सकता है।

गोल्डन क्रिसेंट क्या है?

- **गोल्डन क्रिसेंट में अफगानिस्तान, ईरान और पाकिस्तान शामिल हैं**
- **यह क्षेत्र संगठित अपराध गतिविधियों के लिए कुख्यात है, जैसे अवैध ड्रग्स का प्रवाह, जो अन्य अवैध गतिविधियों में सहायक होता है।**
- गोल्डन क्रिसेंट से भारत की निकटता के कारण, यह मादक पदार्थों की तस्करी के प्रति संवेदनशील हो गया है।
- **इसमें 2 मार्ग शामिल हैं** :
    - **उत्तरी मार्ग**: अफीम और हेरोइन की तस्करी ताजिकिस्तान और किर्गिज़स्तान के रास्ते रूसी संघ में की जाती है।
    - **दक्षिणी मार्ग:** हेरोइन अफगानिस्तान से पाकिस्तान और ईरान होते हुए समुद्र के रास्ते दक्षिण एशिया, अफ्रीका और ओशिनिया क्षेत्र तक पहुंचती है।

गोल्डन ट्रायंगल

- **वह क्षेत्र जहाँ थाईलैंड, लाओस और म्यांमार की सीमाएँ रुआक और मेकांग नदियों के संगम पर मिलती हैं।**

तथ्य:

- संयुक्त राष्ट्र मादक पदार्थ एवं अपराध कार्यालय (UNODC) का अनुमान है कि **विश्व की 80 प्रतिशत अफीम और हेरोइन की तस्करी अफगानिस्तान से होती है।**
- **म्यांमार दुनिया में मॉर्फीन और हेरोइन का दूसरा सबसे बड़ा अवैध आपूर्तिकर्ता है।**

- **क्षेत्रीय नेतृत्व के लिए SAGAR का लाभ उठाना:** भारत का SAGAR (क्षेत्र में सभी के लिए सुरक्षा और विकास) सिद्धांत भारत को एक सुरक्षा प्रदाता और विकास साझेदार के रूप में स्थापित करता है।
    - समुद्री सुरक्षा, व्यापार और आपदा राहत पर अग्रणी पहल से भारत का प्रभाव और विश्वसनीयता बढ़ सकती है।
- **आर्थिक एवं ऊर्जा सुरक्षा:** हिंद महासागर क्षेत्र के राष्ट्र भारत के लिए प्रमुख व्यापार एवं ऊर्जा साझेदार हैं, विशेषकर तेल एवं गैस आयात में।

    - सुरक्षित और स्थिर समुद्री मार्ग सुनिश्चित करना भारत की आर्थिक वृद्धि और ऊर्जा सुरक्षा के लिए महत्वपूर्ण है।
- **कूटनीतिक और सामरिक स्वायत्तता:** एक एकीकृतकर्ता के रूप में कार्य करने से भारत इस क्षेत्र में एक विश्वसनीय और स्वतंत्र शक्ति के रूप में स्थापित होगा।
    - एक संतुलित और सहयोगात्मक दृष्टिकोण भारत को अपने सामरिक हितों से समझौता किए बिना क्षेत्रीय और क्षेत्र-बाह्य दोनों शक्तियों के साथ जुड़ने की अनुमति देगा।

भारत हिंद महासागर क्षेत्र में एकीकरणकर्ता के रूप में कैसे कार्य कर सकता है?

- **संस्थागत ढांचे को मजबूत करना:** संवाद और सहयोग में सुधार के लिए आईओआरए और बिम्सटेक जैसे क्षेत्रीय समूहों को पुनर्जीवित करना।
    - अधिक सुरक्षा समन्वय के लिए हिंद महासागर नौसैनिक संगोष्ठी (आईओएनएस) के दायरे और प्रभाव का विस्तार करना।
- **समुद्री सुरक्षा और निगरानी को बढ़ाना:** वास्तविक समय की खुफिया जानकारी साझा करने के साथ एक मजबूत समुद्री डोमेन जागरूकता (एमडीए) नेटवर्क विकसित करना।
    - समुद्री सुरक्षा में सुधार के लिए हिंद महासागर क्षेत्र के देशों के साथ संयुक्त नौसैनिक अभ्यास और गश्ती बढ़ाना।
- **आपदा प्रतिक्रिया और मानवीय सहायता का नेतृत्व करना:** एक समर्पित HADR (मानवीय सहायता और आपदा राहत) निधि और प्रतिक्रिया टीम की स्थापना करना।
    - प्राकृतिक आपदाओं पर त्वरित प्रतिक्रिया के लिए अस्पताल जहाजों और उभयचर भारी-उठाने की क्षमता की तैनाती करना।
- **आर्थिक एवं अवसंरचना सहयोग:** हिंद महासागर क्षेत्र के देशों में बंदरगाह विकास और समुद्री संपर्क परियोजनाओं में निवेश करना।
    - समावेशी विकास को बढ़ावा देने के लिए **SAGAR (क्षेत्र में सभी के लिए सुरक्षा और विकास)** जैसे प्लेटफार्मों का लाभ उठाएं ।
- **सॉफ्ट पावर और कूटनीतिक जुड़ाव:** आईओआर में सद्भावना और एकता को बढ़ावा देने के लिए भारत के ऐतिहासिक और सांस्कृतिक संबंधों का उपयोग करना।
    - आईओआर देशों के साथ शैक्षिक, तकनीकी और सांस्कृतिक आदान-प्रदान को बढ़ावा देना।
- **रणनीतिक स्वायत्तता और संतुलित सहभागिता:** क्षेत्रीय और क्षेत्र-बाह्य शक्तियों के साथ साझेदारी को संतुलित करते हुए रणनीतिक स्वतंत्रता बनाए रखना।
    - क्षेत्रीय विवादों में भारत को एक विश्वसनीय मध्यस्थ और स्थिरता प्रदान करने वाले के रूप में स्थापित करना।

स्रोत: **Indian Express: The Ocean Front**

विस्तृत कवरेज

महिलाओं की राजनीतिक भागीदारी को कौन से कारक प्रभावित करते हैं?

संदर्भ

यद्यपि भारत ने कई प्रभावशाली महिला नेताओं को जन्म दिया है, फिर भी महिलाओं की समग्र राजनीतिक भागीदारी अभी भी कम है।

महिलाओं की राजनीतिक भागीदारी का महत्व -

- **लैंगिक समानता में प्रगति:** राजनीति में महिलाओं की भागीदारी लैंगिक समानता और वास्तविक लोकतंत्र प्राप्त करने के लिए मौलिक है।
    - यह सार्वजनिक निर्णय लेने में महिलाओं की प्रत्यक्ष भागीदारी को सुगम बनाता है तथा महिलाओं के प्रति बेहतर जवाबदेही सुनिश्चित करता है।
- **बेहतर नीतिगत परिणाम:** राजनीतिक पदों पर आसीन महिलाएं अक्सर स्वास्थ्य देखभाल, शिक्षा और सामाजिक कल्याण जैसे मुद्दों को प्राथमिकता देती हैं।
    - उनकी उपस्थिति से अधिक व्यापक और संतुलित नीतिगत निर्णय लिए जा सकते हैं, जो विविध सामाजिक आवश्यकताओं को संबोधित करते हैं।
- **उन्नत लोकतांत्रिक प्रक्रियाएं:** महिलाओं का बढ़ता प्रतिनिधित्व यह सुनिश्चित करके लोकतांत्रिक मूल्यों को मजबूत करता है कि राजनीतिक संस्थाएं उन आबादी की विविधता को प्रतिबिंबित करती हैं जिनकी वे सेवा करती हैं।
    - यह समावेशिता लोकतांत्रिक प्रक्रियाओं की वैधता को बढ़ाती है तथा जनता के विश्वास को बढ़ाती है।
- **आर्थिक वृद्धि और विकास:** महिलाओं के राजनीतिक प्रतिनिधित्व की उच्च दर कानूनी समानता और आर्थिक अवसर से निकटता से जुड़ी हुई है।
    - यह सहसंबंध बताता है कि महिलाओं की राजनीतिक भागीदारी आर्थिक वृद्धि और विकास में योगदान दे सकती है।
- **रोल मॉडल और प्रेरणा:** नेतृत्वकारी पदों पर आसीन महिलाएं रोल मॉडल के रूप में कार्य करती हैं, तथा अन्य महिलाओं और लड़कियों को राजनीति और नेतृत्व के क्षेत्र में करियर बनाने के लिए प्रेरित करती हैं, जिससे धीरे-धीरे विभिन्न क्षेत्रों में लैंगिक असमानताएं कम होती हैं।

राजनीति में महिलाओं की भागीदारी से जुड़ी चुनौतियाँ -

- **समय का उपयोग और देखभाल कार्य:** महिलाएं पुरुषों की तुलना में अवैतनिक देखभाल कार्यों में चार गुना अधिक समय व्यतीत करती हैं, जिससे राजनीति में भाग लेने की उनकी क्षमता सीमित हो जाती है।
    - सामाजिक मानदंड पारंपरिक घरेलू प्रोफाइल (जैसे, विवाहित और बच्चों वाली) वाली महिला उम्मीदवारों के पक्ष में हैं, जिससे अतिरिक्त बाधाएं उत्पन्न होती हैं।
- **नेतृत्व को पुरुष प्रधान क्षेत्र माना जाता है:** पितृसत्तात्मक मानदंड और कठोर लैंगिक भूमिकाएं महिलाओं को औपचारिक निर्णय लेने के क्षेत्र से बाहर रखती हैं।
    - पारंपरिक संदर्भ इस विचार को पुष्ट करते हैं कि नेतृत्व स्वाभाविक रूप से पुरुषोचित होता है।
- **प्रतिक्रिया, उत्पीड़न और हिंसा:** बदनामी अभियान, ब्लैकमेल और मीडिया पूर्वाग्रह महिला राजनेताओं की विश्वसनीयता और प्रभाव को कमजोर करते हैं।
- **संस्थागत बाधाएं और राजनीतिक संरचनाएं:** राजनीतिक पार्टी संरचनाएं अक्सर नेतृत्व के पदों के लिए पुरुष उम्मीदवारों का पक्ष लेती हैं।
    - पार्टी में आंतरिक समर्थन का अभाव और लिंग कोटा का अभाव महिलाओं के लिए अवसरों को कम करता है।
    - चुनावी वित्तपोषण और राजनीतिक नेटवर्किंग अभी भी पुरुष-प्रधान बनी हुई है, जिससे महिलाओं के लिए संसाधनों तक पहुंच कठिन हो रही है।

- **सामाजिक एवं सांस्कृतिक मानदंड:** गहरी जड़ें जमाए हुए पितृसत्तात्मक मूल्य महिलाओं को नेतृत्वकारी भूमिकाएं निभाने से हतोत्साहित करते हैं।
    - पारिवारिक और सामाजिक अपेक्षाएं अक्सर महिलाओं पर सार्वजनिक जीवन की अपेक्षा घरेलू जिम्मेदारियों को प्राथमिकता देने का दबाव डालती हैं।
    - महिलाओं की "भावनात्मक प्रकृति" के बारे में रूढ़िवादिता का उपयोग उनकी राजनीतिक क्षमता को कमज़ोर करने के लिए किया जाता है।
- **कानूनी एवं नीतिगत अंतराल:** महिलाओं को राजनीतिक हिंसा और भेदभाव से बचाने के लिए मजबूत कानूनी ढांचे का अभाव।
    - लिंग कोटा और आरक्षण नीतियों का अपर्याप्त कार्यान्वयन।
    - समान प्रतिनिधित्व और जवाबदेही सुनिश्चित करने हेतु कमजोर राजनीतिक इच्छाशक्ति।

तथ्य

- भारत की संसद में महिलाओं का प्रतिनिधित्व **वैश्विक औसत 25% से काफी नीचे है।**
    - **महिलाओं का प्रतिनिधित्व 2004 तक 5-10% से बढ़कर वर्तमान 18वीं लोकसभा में 13.6% हो गया है।**
    - **राज्य सभा में महिलाओं की संख्या 13% है।**
- संसद के निचले सदन में महिलाओं के प्रतिनिधित्व के मामले में भारत **185 देशों में से 143वें स्थान पर है।**
- **राज्य विधानसभाओं में महिलाओं का प्रतिनिधित्व:** राज्य विधानसभाओं में महिला विधायकों का राष्ट्रीय औसत केवल 9% है।
    - किसी भी राज्य में 20% से अधिक महिला विधायक नहीं हैं।
    - राज्यों में सबसे अधिक प्रतिनिधित्व छत्तीसगढ़ में है, जहां 18% महिला विधायक हैं।
- विश्व स्तर पर, केवल 25% राष्ट्रीय सांसद महिलाएं हैं, तथा केवल 22 देशों में ही महिलाएं राजनीतिक सत्ता के सर्वोच्च पदों पर हैं।

महिलाओं की राजनीतिक भागीदारी को कैसे मजबूत किया जाए -

- **पार्टी कोटे के लिए वित्तीय प्रोत्साहन:** महिला उम्मीदवारों को नामांकित करने और चुनने वाले राजनीतिक दलों को वित्तीय प्रोत्साहन प्रदान करना।
    - **उदाहरण: जॉर्जिया** में, यदि किसी राजनीतिक पार्टी की सूची में **शीर्ष 10 नामों में से** कम से कम 30% महिलाएं हों, तो **उसे 30% अधिक धनराशि प्राप्त होती है।**
    - दीर्घकालिक परिवर्तन को प्रोत्साहित करने के लिए उन पार्टियों को पुरस्कृत करना जो सफलतापूर्वक महिलाओं को चुनती हैं।
- **स्वैच्छिक पार्टी कोटा के लिए अनुकूल वातावरण तैयार करना:** राजनीतिक दलों को स्वैच्छिक रूप से आंतरिक लिंग कोटा अपनाने के लिए प्रोत्साहित करना।
    - **उदाहरण: कजाकिस्तान** में, केंद्रीय चुनाव आयोग और राष्ट्रीय महिला मामलों के आयोग ने पार्टी चार्टर में लिंग कोटा के लिए सिफारिशों का समर्थन किया।
    - सार्वजनिक वक्तव्यों और आधिकारिक दिशानिर्देशों के माध्यम से सरकारी समर्थन को बढ़ावा दें।
- **वैधानिक उम्मीदवार कोटा और आरक्षित सीटें लागू करना**
    - राजनीतिक संस्थाओं में महिलाओं का प्रतिनिधित्व सुनिश्चित करने के लिए कानूनी रूप से अनिवार्य कोटा या आरक्षित सीटें लागू करना।
    - **उदाहरण**: कोटा वाले देशों (जैसे, अफगानिस्तान, नेपाल, इंडोनेशिया) में राष्ट्रीय और स्थानीय शासन में महिलाओं का प्रतिनिधित्व बढ़ा है।
- **महिला नेतृत्व विकास कार्यक्रमों का समर्थन करना:** नेतृत्व प्रशिक्षण, मार्गदर्शन और कौशल विकास कार्यक्रमों को लागू करना।
    - सार्वजनिक भाषण, निर्णय लेने, प्रचार और आत्म-अभिकथन पर ध्यान केंद्रित करना।

  - **उदाहरण**: एशिया-प्रशांत क्षेत्र के 41 देशों में से **20 देशों ने अल्पसंख्यकों और युवा महिलाओं को** लक्षित करते हुए ऐसे कार्यक्रम चलाने की सूचना दी।
  - सर्वोत्तम प्रथाओं में **स्थानीय स्वामित्व**, **सामूहिक दृष्टिकोण** और **अंतर्राष्ट्रीय साझेदारियां शामिल हैं**।
- **लैंगिक रूप से संवेदनशील नीतिगत माहौल तैयार करना:** लैंगिक भेदभाव और बहिष्कार को रोकने के लिए नीतियों की निगरानी और संशोधन करना।
  - **उदाहरण**: **दक्षिण कोरिया ने पूर्वाग्रह से निपटने के लिए लैंगिक रूप से भेदभावपूर्ण मीडिया** सामग्री की रिपोर्ट करने हेतु नागरिकों के लिए एक मंच बनाया।
- **वित्तीय और संरचनात्मक सहायता सुनिश्चित करना:** महिला उम्मीदवारों के लिए वित्तीय सहायता, अभियान वित्तपोषण और संभार-तंत्रीय सहायता प्रदान करना।
  - बच्चों की देखभाल , मातृत्व और पितृत्व अवकाश तथा नेटवर्किंग के अवसर जैसी सहायता प्रणालियां स्थापित करना।
  - **उदाहरण**: नेपाल में कोटा लागू होने के बाद महिलाओं को वित्तीय और प्रबंधन चुनौतियों का सामना करना पड़ा, जिससे निरंतर प्रशिक्षण और सहायता की आवश्यकता पर प्रकाश डाला गया।

स्रोत: **The Hindu: What factors influence women's political participation?**